अध्याय : ४

'झरोखे' और 'तमस' का शिल्पविधान

अध्याय : 4

'झरोखे' और 'तमस' का शिल्पविधान

शिल्पविधान :

किसी भी उपन्यास में कथावस्तु का होना अत्यंत आवश्यक हैं। उपन्यास की घटनाएँ पात्रों को आधार लेकर घटित होती है। पात्रों का अपना विशिष्ट चरित्र, व्यक्तित्व होता हैं। उपन्यासकार उन पात्रों के आधारपर हमें दिखाता हैं कि व्यक्तित्व कैसे होता हैं। उपन्यास के पात्र आपस में बातचीत करते हैं और कभी-कभी स्वयं से भी बातचीत करते है। उपन्यास की कथावस्तु, पात्र, बातचीत यह सब किसी विशिष्ठ स्थान काल में घटित होता हैं। उपन्यासकार के लिए जरूरी है कि वह यह दिखाये कि स्थान और काल क्या हैं। इन सभी के अंतर्गत उपन्यासकार का कोई उद्‌देश्य जरूर होता है। इस उद्‌देश्य को उपन्यासकार अपनी स्वतंत्र शैली में प्रकाशित करता है।

इसप्रकार अगर शिल्पविधान की दृष्टि से विचार किया जाए तो निम्नलिखित बातों की ओर ध्यान देना आवश्यक होता हैं।

(1) वस्तुयोजना / कथावस्तु

(2) चरित्रचित्रण

(3) कथोपकथन

(4) देश, काल, वातावरण

(5) भाषा-शैली

(6) उद्‌देश्य

उपर्युक्त बातों को विस्तृत रूप में देखा जाए तो शिल्पविधान का महत्व समझ में आता हैं।

(1) वस्तुयोजना / कथावस्तु :

(अ) कथावस्तु का महत्व :-

मानव के शरीर में आत्मा या प्राण का जो महत्व होता है, वही उपन्यास में कथावस्तु का महत्व होता हैं। कथावस्तु उपन्यास की आत्मा होती हैं। इसीकारण उपन्यासकार को अत्यंत कुशलता एवं कौशल्य से कथानक का चुनाव करना चाहिए। उपन्यास की उत्तमता अच्छे कथानक पर निर्भर होती है। घटनाओं का एक जगह संकलन मात्र ही कथानक नहीं होता। घटनाओं को योग्य श्रृंखला में बाँधकर सुसम्बन्ध रूप में घटनाओं के पारस्परिक सम्बन्ध का अध्ययन करना चाहिए। इसप्रकार घटनाओं की यह सुसम्बन्ध श्रृंखला उसके अंग्रेजी नाम "प्लाट" को सार्थक करती हैं।

इसप्रकार कथावस्तु अपनी एक श्रृंखला में होती है। और इन सभी घटनाओं का परस्पर सम्बन्ध होता हैं।

(ब) वस्तु संकलन :-

उपन्यास की कथावस्तु इसप्रकार होनी चाहिए कि कथावस्तु को ग्रहण करते समय हमें किसी बाह्य तत्व की आवश्यकता न लेनी पड़े। इसलिए कथावस्तु सुगठित होनी चाहिए। कथावस्तु में प्रारंम्भ से लेकर अन्त तक एकसूत्रता, क्रमबध्दता और परिपूर्णता का होना अत्यंत आवश्यक रहता हैं।

उपन्यास की घटनाएँ भी क्रमबध्द होनी चाहिए। इसप्रकार एक क्रम में अथवा श्रृंखला में बाँधी घटनाएँ कथावस्तु को सुगठित रूप देती है। घटनाओं को इसप्रकार श्रृंखलाबध्द करना चाहिये कि सब घटनाएँ एक-दूसरे के साथ श्रृंखला में गुंथकर उसे एक दूसरे से अलग न होने दे। मानवी शरीर में हड्डियों का जो महत्व होता है वही महत्व उपन्यास में घटनाओं का होता हैं।

(क) <u>अच्छे कथानक के तत्व</u> :–

मौलिकता, सुसंगठिता, संभवता और रोचकता ये चार तत्व ही अच्छे कथानक के तत्व माने जाते हैं।

(1) <u>मौलिकता</u> :– आज का आधुनिक जीवन अत्यंत जटिल है, उसमें अनेक समस्याएँ भी है, इसीकारण कथानक में मौलिकता को पर्याप्त गुंजाईश हैं। वेश्या महिलाओं का उध्दार, मालिक–मजदूरों का सम्बन्ध, कामकाजी महिलाओं की समस्याएँ, औद्योगिक परिवेश में पति–पत्नी के सम्बन्ध, पारिवारिक समस्याएँ, तलाकपीडित पति–पत्नी के बच्चों की समस्याएँ आदि विषय आजकल के उपन्यासकारों के लिए नवीन विषय हैं। इन समस्याओं का चित्रण भी अनेक उपन्यासकारों ने अपने उपन्यास साहित्य में किया है। उपन्यास का कथानक देश, काल के अनुसार नवीन आवश्य होना चाहिए। लेखक को नयी दृष्टि के साथ, नये विषय को, नयेपन के साथ प्रस्तुत करना चाहिए।

(2) <u>सुसंगठिता</u> :– उपन्यास की कथावस्तु सुसंगठित होनी चाहिये। कथावस्तु अनेक स्थानों और समयों से प्रारंभ होकर भी एक दूसरे से जुडी रहती है और आपस में मिलकर सुगठित कथानक का निर्माण करती है। प्रारम्भ में कथानक बिखरा हुआ जरूर लगता है, परंतु अंत तक पहुँचते, पहुँचते कथानक का कोई भी भाग मूल कथानक से अलग लगना नहीं चाहिये। कथावस्तु में घटनाओं का परस्पर सम्बन्ध हो और घटनाएँ कार्यकारण तथा देश, काल से जुडी होनी चाहिए। इसप्रकार कथानक का सुसंगठित होना अत्यंत आवश्यक है।

(3) <u>संभवता</u> :– उपन्यास पढ़ते समय पाठक की विश्वसनीयता बनी रहने के लिए, यह तत्त्व अत्यंत महत्वपूर्ण है। उपन्यासकार उपन्यास में घटना, पात्र, स्थल आदि का ऐसा वर्णन करता है कि वह काल्पनिक न लगकर सत्य ही लगती हैं। यह काल्पनिक घटनाएँ भी सत्य घटनाओं की प्रतिछाया होती है। इसीकारण लगता है कि पूरा उपन्यास ही सत्य घटनाओं पर आधारित है। अतः संभवता ही कथानक का महत्वपूर्ण तत्व हैं।

(4) रोचकता :– उपन्यास को अंग्रेजी में 'नॉवेल' (Novel) कहा जाता है। 'नॉवेल' का शब्दशः अर्थ होता है नवीन अथवा नवल। उपन्यासकार को सत्य सुन्दर रूप में प्रस्तुत करना चाहिये। उसमें रोचकता होना आवश्यक है और रोचकता बनाए रखने के लिए उपन्यासकार को उसकी सृष्टि करनी चाहिये। उपन्यास में कथावस्तु, पात्र निर्मिती यहाँ तक की वातावरण निर्मिती द्वारा भी रोचकता निर्माण की जाती रही है। कौतुहल के द्वारा भी रोचकता निर्माण की जाती रही है।

इसप्रकार शिल्पविधान में अंतर्गत वस्तुयोना / कथावस्तु पर विचार कने के पश्चात हम भीष्म साहनी के उपन्यासों की कथावस्तु पर विचार क्रहते हैं तो दिखता है कि भीष्मजी ने अपने उपन्यासों में सामाजिकता को प्रधान रूप दिया है। आपने अनेक छोटी–मोटी घटनाओं को एक दूसरे के साथ जोडा हैं।

झरोखे :–

भीष्म साहनी ने 'झरोखे' को अपने बचपन की आत्मकथा माना है। अपने बचपन की वास्तविक जिन्दगी को भीष्मजी ने झरोखे उपन्यास की कथावस्तु के रूप में चित्रित किया है। 'झरोखे' की घटनाएँ छोटी छोटी हैं परंतु इन्हीं छोटी घटनाओं का प्रभाव बालक के व्यक्तित्व निर्माण में होता है। मोतीराम के बारहमासे गीत, पंडित तथा परिवार के आर्यसमाजी संस्कार, बालक और भाई बलदेव की उस पर होनेवाली प्रतिक्रिया, नौकर तुलसी का वेदमंत्रों का पठन, आर्यसमाजी और व्यापारी पिताजी, उनकी दूकानदारी, बालक की बीमारी, बालक और भाई बलदेव का आर्यसमाजी स्कूल में प्रवेश, परिवार में दोनों बहनों की मौत, पिताजी का व्यापारी मुसलमान और गली के मुसलमानों के साथ अलग–अलग बर्ताव, बलदेव का परिवार तथा संस्कारों के खिलाफ विद्रोह, आर्यसमाज के औषधालय में तुलसी की नौकरी, किशोर बच्चों का वीर्यपात और उसपर किशोर बच्चों की प्रतिक्रिया, आदि अनेक छोटी छोटी घटनाओं के द्वारा ही झरोखे उपन्यास की कथा का निर्माण भीष्मजी ने किया हैं। इन घटनाओं के द्वारा वह दिखाना चाहते हैं कि ऐसी घटनाओं का प्रभाव ही बालक के व्यक्तित्व निर्माण पर होता है। 'झरोखे' में

बालक अर्थात भीष्म साहनी मुख्य पात्र है। उपन्यास में कुछ गौण घटनाएँ जरूर है, परंतु उनके कारण ही अनेक मुख्य घटनाएँ घटित होती है। गौण घटनाओं में विद्या और विमला, बालक बलदेव, व्यापारी पिताजी, माँ, पडोसी तॉगेवाले, मुहल्ले के मुसलमान आदि पात्रों से संबंधित घटनाएँ गौण होते हुए भी महत्वपूर्ण है। गौण कथाएँ भी मुख्य कथा के विकास में सहाय्यक होती हैं। इन कथाओं का कोई अलग अस्तित्व नहीं हैं। 'झरोखे' उपन्यास की कथा सभी प्रकार के पात्रों के विकास के साथ आगे बढती हैं। उपन्यास में धार्मिक और दार्शनिक कुप्रभाव दिखाकर बच्चे का स्वाभाविक विकास करानेवाली प्रवृत्तियों का निर्माण 'झरोखे' उपन्यास में दिखाया है। पात्रों के चरित्र द्वारा भीष्मजीने कथावस्तु का निर्माण किया है। बचपन से ही लेखक के जीवन में घटनेवाली सभी छोटी-मोटी घटनाएँ अपने गुप्त, गम्भीर कारणों के कारण पाठक को सोचने के लिए विवश करती है। उपन्यास की कथावस्तु में धार्मिक आडम्बरों, मिथ्या आदर्शों, झूठे सिध्दांतों एवं रूढियों के विरूध्द एक गैर साम्प्रदायिक सामजिक दृष्टिकोण की खोज करने का प्रयास भीष्मजी ने किया है। उपन्यास में दिखाया गया है कि धर्म की तंगदिली से मनुष्य कमजोर एवं आत्मनिर्वासित होता है। इन्हीं धार्मिक, साम्प्रदायिक संस्कारों के कारण बच्चे भी आत्मनिर्वासित, कुंठित और विभाजित होते हैं, उनका स्वाभाविक विकास भी नहीं हो पाता। इन्ही सब कारणों को स्पष्ट करने के लिए भीष्म साहनीजी ने 'झरोखे' उपन्यास की कथावस्तु का निर्माण किया है। अनेक छोटी-मोटी घटनाएँ एक साथ होते हुए भी 'झरोखे' उपन्यास की कथावस्तु मौलिक, रोचक और सुसंगठित बनी है, जो लेखक के जीवन से सम्बन्धित सत्य पर आधारित हैं। लेखक ने दिखाया है कि आसपास का परिवेश, परिवार के सम्बन्ध, बचपन की अनुभूतियाँ व्यक्तित्व का गठन किसप्रकार करती है। भीष्मजी का बचपन जिस रावलपिण्डी शहर में बीत गया उसी को और अपने परिवार को कथावस्तु का घटनास्थल बनाया है। 'झरोखे' उपन्यास की कथावस्तु भारतीय मध्यवर्गीय परिवार, बच्चे, उनके संस्कार की समस्या का प्रतिनिधित्व करती हैं।

<u>तमस</u> :

'तमस' उपन्यास में अनेक घटनाएँ पाठकों के सामने रखकर पूरा साम्प्रदायिक परिवेश कथावस्तु में उपस्थित करने में लेखक भीष्म साहनीजी सफल हुए हैं। कथावस्तु का निर्माण अनेक कहानियों का संकलन एक साथ करके किया गया है। सभी घटनाएँ सुनियोजित क्रम और संकलन से आयी है।

1947 के मार्च–अप्रैल में हुए भीषण साम्प्रदायिक दंगों के पाँच दिनों को आधार बनाकर भीष्मजीने 'तमस' उपन्यास की कथावस्तु का निर्माण किया है। जो शक्तियाँ साम्प्रदायिकता फैलाती हैं, उन शक्तियों को भीष्मजीने बेनकाब किया है। 'तमस' उपन्यास का मूल ढाँचा कमजोर लगता है, परंतु बीच की छोटी-छोटी कहानियाँ देशविभाजन के समय फैली साम्प्रदायिकता की कहानियाँ हैं। साम्प्रदायिक दंगों की भयंकरता के मार्मिक सन्दर्भ हैं।

उपन्यास के प्रारम्भ में ही मुराद अली के कहने पर नत्थु चमार द्वारा सुअर को मारकर मस्जिद की सीढ़ियों पर फेंकना, प्रतिक्रियास्वरूप मुस्लिमोंद्वारा गाय की हत्या, अफवाहें, परस्पर धार्मिक विद्वेष, कांग्रेस की प्रभातफेरी, मुस्लिम लीग के नारे, हिंदु महासभा के नारे, अंग्रेज कलेक्टर कमिशनर रिचर्ड से नागरिकों के शिष्टमंडल की मुलाकात, प्रशासन का दंगे रोकने के लिए कोई प्रयास न करना, शहर में आगजनी का ताण्डव, लूटपाट, आर्यसमाज का रक्षात्मक पवित्रा, आक्रमक मुसलमान, कम्युनिस्ट पार्टिद्वारा दंगों को रोकने का असफल प्रयत्न, देवव्रत द्वारा रणवीर और युवकों को हिंसा और साम्प्रदायिकता की दिक्षा, रणवीर द्वारा गरीब इत्रफरोश की हत्या, शाहनवाजह द्वारा हिन्दू मित्रों की सुरक्षा, लूट, हत्याएँ, आगजनी का शहर में ताण्डव आदि घटनाएँ एक के बाद एक घटित होती है, शहर की यह साम्प्रदायिकता गाँवों में भी फैल जाती है। ढोक इलाहीबख्श, खानपूर, सैयदपूर आदि गाँवों में मृत्यु का ताण्डव होता है। इन गाँवों में भी लूटपाट, आगजनी, बलात्कार करने वाले लीगी गुण्डे, सिक्खों की गुरूद्वारे में मोर्चेबन्दी, सिक्ख औरतों की कुएँ में आत्महत्याएँ, राजो द्वारा हरनाम और बन्तों को घर में पनाह, इकबालसिंह का धर्मपरिवर्तन आदि घटनाएँ गाँवों में घटित होती हैं। अन्त में हवाई जहाज के एक चक्कर से ही

दंगों का रूक जाना, आँकडे जमा करना, व्यापारियों की स्वार्थी वृत्ति, आदि अनेक घटनाओं के द्वारा 'तमस' उपन्यास की कथावस्तु का जाल बुना गया है।

इन सभी घटनाओं को भीष्मजी ने संयम के साथ नापतौलकर उपस्थित किया है। 'तमस' की घटनाएँ इसप्रकार संगठित की गयी है कि कृति में एक नया स्वाद आता है। आतंक, भय, सनातनी, हिंसा–प्रतिहिंसा, अमानवीयता के चित्र लेखक ने पाठकों के सामने एक के बाद एक उपस्थित किए हैं। भीष्मजी का सारा ध्यान साम्प्रदायिक परिवेश और स्थिति पर होने के कारण कोई भी एक कथा या घटना श्रृंखला से नहीं चलती। "प्राय: एक अध्याय किसी एक प्रमुख पात्र या संगठन–समूह के कोणे से खुलता है और उससे सम्बन्धित स्थितियों को उजागर करनेवाली घटना में प्रस्तुत होती है। इसी अर्थ में वह किसी व्यक्ति की नहीं, गतिशील स्थितियों की कहानी होती है और उनके ही सिर नायकत्व जाता है।"[1]

'तमस' की कथा में दो सूत्रधार हैं, मुरादअली और रिचर्ड। उपन्यास की शुरूआत ही ये दोनों पात्र करते हैं और कथा को अन्त तक ले चलते हैं। ये दोनों पात्र आमने–सामने नहीं आते लेकिन ये दोनों ही दंगे के प्रमुख सूत्रधार हैं। जिस सालोतरी साहब को सूअर की जरूरत थी वह सालोतरी साहब अन्त तक अनकहा और रहस्य में रहता है। उपन्यास में अनेक बातें छुटी जैसी या अधूरी लगती है। 'तमस' उपन्यास का पूर्वाध दंगों की शुरूआत और उनके शहरी जीवन पर प्रभाव से सम्बन्धित है और उत्तरार्ध देहात तथा देहाती लोगों पर साम्प्रदायिकता का प्रभाव क्या हुआ इससे सम्बन्धित है। शुरूआत में शहरी इलाके में प्रारम्भ हुए दंगों का अन्त शहर में ही लाकर किया गया है। शहर तथा ग्रामीण इलाके में घटित साम्प्रदायिकता की घटनाएँ वास्तविक है। भीष्म साहनीजी ने स्वयं स्वीकार किया है कि रावलपिण्डी में देशविभाजन के समय हिन्दू–मुसलमानों में साम्प्रदायिक दंगे हुए थे और भीष्मजी ने कांग्रेस कार्यकर्ता के रूप में मरने वालों के आँकडे इकठ्ठा किए थे। "रावलपिण्डी में जहाँ हमारा घर था वहाँ हिन्दूओं और मुसलमानों की मिली–जुली आबादी थी मैंने साम्प्रदायिक दंगे अपने आँखों से देखे है"[2]

'तमस' की कथा अत्यन्त दिलचस्प बनी है। पाकिस्तान बनने की प्रतिक्षा में जुड़े कुछ पात्रों के वाक्य, अंग्रेज और आज़ादी के उल्लेखों को अगर दुर्लक्षित किया जाए तो यह कथा 'स्वातंत्र्योत्तर भारत में हुए किसी भी साम्प्रदायिक दंगे की कथा हो सकती है। पूरे उपन्यास में कही भी ऐतिहासिक खण्ड या तिथिक्रम का वर्णन नहीं किया गया हैं। अनेक घटनाओं को एक साथ रखकर 'तमस' की कथावस्तु का निर्माण किया गया है। प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने उन सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, साम्प्रदायिक शक्तियों का वर्णन किया है जो शक्तियाँ आज भी हमारे देश में विद्यमान है। भारत–पाकिस्तान विभाजन के समय जो सामाजिक स्थिति निर्माण हो गयी थी उन परिस्थितियों का सामाजिक चित्र का सही मूल्यांकन प्रस्तुत उपन्यास में किया गया हैं। अपने शासन को बनाए रखने के लिए शासक किस हद तक जाते हैं और जनता भी अपना नियंत्रण खोकर अपना ही नुकसान कर बैठती है, इसका सफल एवं जिवंत चित्रण भीष्मजी ने 'तमस' उपन्यास में किया है। अज्ञान, सत्ता, मद का अंधकार परिवेश को किसप्रकार नष्ट करता है, इसे लेखक ने 'तमस' में दिखाया है।

2. <u>चरित्र–चित्रण</u> :

भीष्म साहनी के उपन्यासों में पात्रों का बड़ा योगदान रहा है। उनके उपन्यासों में पात्रसृष्टि अत्यंत व्यापक है। भीष्म साहनी एक यथार्थवादी रचनाकार होने के कारण उनके सभी पात्र किसी एक वर्गविशेष से सम्बन्धित रहे हैं। उनके उपन्यास में चित्रित पात्रों को हम निम्न प्रकारों में विभाजित कर सकते हैं।

(क) <u>व्यापारी वर्ग के पात्र</u> : इनमें भीष्मजी के पिताजी हरवंशलाल, लाला लक्ष्मीनारायण, रघुनाथ, शाहनवाज, हयातबख्श, नूरइलाही आदि पात्र प्रमुख रहे हैं।

(ख) <u>अधिकारी वर्ग के पात्र</u> : रिचर्ड, लीजा आदि।

(क) मध्यवर्ग के पात्र : भीष्मजी की माँ, बहने विद्या, विमला, हरनामसिंह, बन्तो, आदि।

(घ) निम्नवर्ग के पात्र : तुलसी, नत्थु और उसकी पत्नी, मिल्खी, इत्रफरोश, करीमखान आदि।

(च) राजनीति से सम्बन्धित पात्र : मेहताजी, बख्शीजी, हयातबख्श, वानप्रस्थीजी, देवव्रत, मुरादअली, मनोहरलाल, जनरैल आदि।

(छ) युवावर्ग के पात्र : रणवीर, शंभू, बलदेव, इंद्र, स्वयं भीष्मजी।

(ज) मानवीय आस्था के पात्र : हरनामसिंह, बन्तो, गण्डासिंह आदि।

उपर्युक्त सभी पात्रों का चरित्र चित्रण हम इसप्रकार कर सकते हैं –

(1) यथार्थ जीवन से लिए गए पात्र :

भीष्म साहनीजी मानते हैं कि लेखक उन्हीं पात्रों का सफलता से चरित्र-चित्रण करता है, जिन पात्रों को लेखक स्वयं जानता या पहचानता हो। भीष्मजी ने भी अपने उपन्यासों में ऐसे ही पात्रों का चित्रण किया है, जिन्हें वे स्वयं जानते है या जिनसे अच्छी तरह परिचित हैं। प्रेमचंदजी ने कहा है कि, "मेरे अधिकांश पात्र यथार्थ जीवन से लिए गए हैं, जब किसी पात्र का यथार्थ में अस्तित्व नहीं होगा, तब यह छायामात्र अनिश्चित औरे अविश्वसनीय हो उठती हैं।"[3] ठीक ऐसे ही भीष्म साहनीजी ने अपने जीवन के यथार्थ से पात्रों की सृष्टि की है।

'झरोखें' उपन्यास की कथा भीष्मजी के परिवार से सम्बन्धित है। उपन्यास में भीष्मजी के माता–पिता, बलदेव, विद्या–विमला, तुलसी स्वयं भीष्म साहनी आदि अनेक पात्रों का चरित्र चित्रण किया है।इनके अलावा और भी अनेक लोगों का जैसे भीष्मजी के मित्र, पण्डितजी और व्यापारी मुसलमान, गली के सामान्य लोग आदि का भी चित्रण किया है। इन सभी पात्रों से भीष्मजी बचपन से ही सम्बन्धित रहे हैं। ये सभी पात्र भीष्मजी के यथार्थ जीवन से लिए गये हैं। 'तमस' में जिन पात्रों का चरित्र चित्रण किया है वे पात्र काल्पनिक हो सकते है, परंतु देशविभाजन की घटना से सम्बन्ध रखनेवाले हैं। इ.स.1947 में देशविभाजन के समय जो परिस्थिति निर्माण

हो गयी थी उस परिस्थिति से सम्बन्ध रखनेवाले अनेक पात्रों का जिवंत चित्रण भीष्मजी ने 'तमस' में किया है। लाला हयातबख्श, पीरदाद, देवदत्त, रणवीर, करीमखान, इत्रफरोश, सोहनसिंह, तेजासिंह, नत्थु, रिचर्ड, लिजा, हरनामसिंह, बन्तो, इकबालसिंह, जनरैल, शंकर, बख्शीजी आदि पात्रों के नाम काल्पनिक हो सकते हैं, परंतु यह सभी पात्र देशविभाजन जैसी महत्वपूर्ण घटना से सम्बन्धित है।

इसप्रकार भीष्म साहनी के 'झरोखे' और 'तमस' उपन्यास के सभी पात्र यथार्थ जीवन से सम्बन्धित है और यथार्थ जीवन से ही लिए गये हैं।

(2) प्रतिनिधी पात्र :-

'झरोखे' और 'तमस' के पात्र किसी न किसी वर्गविशेष का प्रतिनिधित्व करते हैं। साम्राज्यवादी शक्ति का प्रतिनिधी पात्र है – रिचर्ड, मध्यमवर्ग के पात्र – भीष्मजी के पिता, माँ, हरनामसिंह, बन्तो, बहने विद्या तथा विमला आदि, निम्नवर्ग के पात्र – नत्थु, तुलसी, मिल्खी आदि, व्यापारी वर्ग के पात्र – पिताजी हरवंशलाल, लाला लक्ष्मीनारायण, रघुनाथ, शाहनवाज, हयातबख्श, नूरइलाही, आदि, मानवीय आस्था के पात्र – हरनामसिंह, बन्तो, गण्डासिंह आदि।

इसप्रकार भीष्मजी के उपन्यासों के पात्र किसी ना किसी वर्गविशेष का प्रतिनिधित्व करते हैं ओर इन पात्रों के माध्यम से उसं समूचे वर्ग के चरित्र को, उनके विचार, रहन–सहन को आसानी से समझा जा सकता है।

(3) चरित्र का प्रस्फुटन :-

भीष्म साहनीजी ने अपने उपन्यासों में पात्रों के चरित्र का प्रस्फुटन अथवा उद्घाटन एक साथ एकदम नहीं किया। आपके पात्रों के चरित्र की विशेषताएँ परिस्थिति और घटनाओं के साथ हमारे सामने चित्रित होती है। 'तमस' में रिचर्ड का पात्र ऐसा ही एक पात्र हैं जिसका चरित्र प्रस्फुटन एक साथ नहीं किया गया हैं कि बल्कि पूरे उपन्यास में अन्त तक एक

एक घटना के द्वारा रिचर्ड के चरित्र की अनेक विशेषताएँ हमारे सामने आती है। पहले वह एक प्रशासक और इतिहास के जानकार के रूप में हमारे सामने आता हैं, बाद में हिन्दु-मुसलमानों में भेदभाव कर उन्हें आपस में एक साथ लड़ानेवाले साम्राज्यवादी शक्ति के रूप में वह हमारे सामने आता हैं। शहर में हो रहे दंगों के बारे में लीजा जब रिचर्ड को पूछती है तो रिचर्ड कहता है कि, "डार्लिंग, हुकूमत करनेवाले यह नहीं देखते कि प्रजा में कौन-सी समानता पायी जाती है, उसकी दिलचस्पी तो यह देखने में होती है कि वे किन-किन बातों में एक दूसरे-से अलग है।"[4] दंगे शुरू होते है तो वह दंगों को नहीं रोकता। इसके एक आदेश से दंगे रूक सकते थे परंतु वह दंगे न रोकनेवाले प्रशासक के रूप में हमारे सामने आता है। दंगे जब समाप्त हो जाते हैं तो वह अनेक मानवतावादी कार्य करनेवाले प्रशासक के रूप में हमारे सामने आता है। उपन्यास के अन्त में वह तबादले से शंकित अधिकारी के रूप में वह हमारे सामने आता हैं। इसप्रकार अनेक घटनाओं का आधार लेकर भीष्म साहनी के पात्र हमारे सामने एक एक विशेषता के साथ प्रस्तुत होते है।

(4) <u>पात्रों के क्रियाकलाप और वार्तालाप</u> :-

पात्रों के चरित्र-चित्रण के लिए भीष्मजी ने उनके पात्रों के वार्तालाप का सहारा लिया है। पात्रों का चरित्र उनके क्रियाकलाप और वार्तालाप के द्वारा स्पष्ट किया गया हैं। 'झरोखे' में पण्डितजी बच्चों को शिक्षा देने के अलावा सदाचार-दुराचार की बातें बताते रहते हैं, "स्त्रियों के पैरों की तरफ देखना चाहिए, चेहरे की तरफ नहीं देखना चाहिए।" "दुराचार है पेशाबवाली जगह को हाथ लगाना। गाली देना भी दुराचार है।"[5]

इसप्रकार पंडितजी के क्रियाकलाप और वार्तालाप द्वारा पंडितजी का चरित्र हमारे सामने स्पष्ट होता हैं। पात्र का चरित्र-चित्रण करने के लिए भीष्मजी ने पात्रों के वार्तालाप का सहारा लिया है।

(5) वर्णनात्मक विधि से पात्र का चरित्र–चित्रण :–

भीष्मजी ने अनेक पात्रों का चरित्र-चित्रण करने के लिए वर्णनात्मक विधि का विस्तृत उपयोग किया है। 'झरोखे' के आरम्भ में ही भीष्मजी ने मंजीफा माँगनेवाले और एक फकीर का वर्णन किया हैं। "मंजीफा क्या है? यह आदमी कौन है जो रोज रात को मंजीफा माँगने आता है? शायद वह यही लाल दाढीवाला लँगडा आदमी हैं, जो दिन के वक्त लंबा थैला लटकाए घूमता हैं।" "क्या सचमुच यह आग की लपट हैं जो अँधेरे में लपकती हुई आगे ही आगे बढती आ रही है? नहीं नहीं, वह फकीर की लाठी के सिर पर बँधा लाल रंग का चिथडा फकीर का सिर मुँडा हुआ है और बदन नंगा है, सिर और कंधे और लंबी–लंबी बाँहों पर तेल चुपडा है। पहाड ड़ंडे। वह फिर पुकारकर कहता है।"[6]

इसप्रकार वर्णनात्मक विधि के द्वारा अनेक पात्रों का चित्रण भीष्म साहनीजी ने किया है।

(6) घटनाओं और परिस्थितिओं के माध्यम से चरित्र-चित्रण :–

उपन्यास में चित्रित घटनाएँ एवं परिवेश का प्रभाव पात्र के चरित्र पर पडता है। पात्र अपने आसपास होनेवाली परिस्थितियों के कारण उसी तरह बनता हैं। 'झरोखे' में भीष्मजी के घर का नौकर तुलसी ऐसा ही एक पात्र है जो परिस्थिति के कारण बदल गया है। परिवार में चलनेवाले वेद तथा मंत्र पठन के कारण तुलसी भी वेदमंत्र में पारंगत होता हैं। वह अत्यंत कम पढ़ा लिखा है परंतु परिवेश के कारण वह भीष्मजी और उनके भाई की तरह वेदमंत्र का पठन करता है। बाजार में कोई पिताजी की ऊँगली मरोड़ता है तो तुलसी इस बात को सहन नहीं कर सकता और उस आदमी की ऊँगली मरोडकर उसे काँटता है। वह आर्थिक कठिनाई कम करने के लिए अनेक जगहोंपर नौकरियाँ करता हैं परंतु अन्त में वह भीष्मजी के घर में ही लौटकर आता है। भीष्मजी ने तुलसी को अनेक घटनाएँ तथा परिस्थितिओं में ढालकर उसका चरित्र–चित्रण किया हैं।

'झरोखे' और 'तमस' उपन्यास के पात्रों का चरित्र-चित्रण देखते हुए हमें एक बात समझ में आती हैं कि भीष्म साहनीजी ने कुछ ऐसे पात्रों का निर्माण अपने उपन्यास में किया है जो पात्र उपन्यास में दूर तक अपना प्रभाव छोड़ जाते हैं। 'झरोखे' में भीष्मजी के बड़े भाई बलदेव जो विद्रोही है, और 'तमस' उपन्यास का कमिश्नर रिचर्ड आदि ऐसे ही पात्र है जो अपने अपने कुछ खास गुणों के कारण पूरे उपन्यास में पाठक पर अपना प्रभाव छोड़ जाते हैं।

भीष्म साहनी एक यथार्थवादी रचनाकार होने के कारण उनका प्रत्येक पात्र किसी न किसी वर्गविशेष का प्रतिनिधित्व करता हैं। उनके पात्र समाज के विस्तृत फैलाव से लिए गये हैं। प्रत्येक पात्र का उद्घाटन उन्होंने अत्यंत सूक्ष्मता से किया हैं। धीरे-धीरे एक एक पहलु को उद्घाटित करते हुए उन्होंने पात्रों का चित्रण किया है। उनके उपन्यासों में चरित्र का फैलाव पूरे उपन्यास में दिखाई देता हैं। सभी पात्रों के चरित्र का अन्तर्बाह्य रूपों को भीष्मजी ने सफलता से चित्रित किया है। कुछ पात्रों का चित्रण करने के लिए भीष्मजी ने कहीं कहीं फ्लैशबैक शैली को अपनाया हैं। इसप्रकार भीष्मजी ने अपने उपन्यास 'झरोखे' और 'तमस' में अनेक पात्रों का सफलता से चरित्र-चित्रण किया है।

(3) <u>कथोपकथन</u> :-

भीष्म साहनी एक यथार्थवादी रचनाकार हैं। उन्होंने अनेक नाटकों में अभिनय किया है। कुशल नाटककार होने के साथ-साथ वह एक सफल अभिनेता होने के कारण संवादों का महत्व जानते हैं। विस्तृत रूप से कथोपकथनों का प्रयोग भीष्मजी ने अपने उपन्यासों में किया हैं। अगर हम भीष्म साहनी के उपन्यास 'झरोखे' और 'तमस' हा अध्ययन करते हैं तो उनके कथोपकथनों में निम्नलिखित गुण देखने को मिलते हैं -

(1) संक्षिप्तता।

(2) व्यंग्यात्मकता।

(3) नाटकीयता ।

(4) पात्रानुकुलता ।

(5) चरित्र–चित्रण और वस्तु की गति में सहायक कथोपकथन।

'झरोखे' और 'तमस' उपन्यास के संदर्भ में उपर्युक्त गुणों का विश्लेषण निम्नप्रकार से किया जा सकता है।

(1) <u>संक्षिप्तता</u> :–

भीष्म साहनी के उपन्यासों में अनेक जगहों पर परिस्थितिरूप संक्षिप्त कथोपकथन का उपयोग किया हैं। इन्हीं स्वाभाविक, कलात्मक और संक्षिप्त कथोपकथन के कारण पात्रों के चरित्र की विशेषताओं पर भी प्रकाश पड़ता हैं। 'तमस' उपन्यास का एक संवाद देखिये –

"तभी खानसामा ट्रे उठाये चला आया। उसे देखकर लिजा बोली :

"वह हिन्दू है या मसुलमान ?"

"तुम बताओ।" रिचर्ड ने कहा।

लीजा देर तक खानसामे की ओर देखती रही जो ट्रे का सामान रख चुकने के बाद बुत–का–बुत बना खडा था।

"हिन्दू है।"

रिचर्ड हँस दिया : "गलत।"

"गलत क्यों?"

"फिर ध्यान से देखे।"

लीजा ने ध्यान से देखा : "सिख है, इसके दाढी है। सिर पर टर्बन है।"[7]

इसप्रकार उपर्युक्त कथोपकथन मार्मिक होने के साथ ही लीजा के चरित्र पर प्रकाश डालता है। यह संवाद पढकर पाठक आगे की कथा जानने के लिए उत्सुक हो जाता है। 'झरोखे' उपन्यास में भी अनेक संवाद संक्षिप्त है, परंतु उत्सुकता बढानेवाले भी है। जैसे–

"मेरे दिल पर हाथ रखकर कहो कि तुम हस्तमैथुन नहीं करते।"

मैं भाई के दिलपर हाथ रखकर कहता हूँ, "नही करता।"

"कहो हस्तमैथुन नहीं करता।"

"हस्तमैथुन नहीं करता।"

"सुरेंद्र है न? सुरेंद्र को जानते हो?"

"हाँ।"

"वह हस्तमैथुन किया करता था। उसका अंग नीला पड गया है।"

मैं भाई की ओर देखे जा रहा हूँ।[8]

(2) व्यंग्यात्मकता :-

भीष्म साहनी के उपन्यासों में व्यंग्यात्मकता अत्यंत कम जगहों पर दिखाई देती है। आपके उपन्यासों मे अभिव्यक्त व्यंग्य अर्धव्यंग्य है। 'तमस' उपन्यास का कमिश्नर रिचर्ड हिदुस्थानी लोगों के बारे में व्यंग्य से कहता है, "सुनो। सभी हिन्दुस्तानी चिड़चिड़े मिजाज के होते हैं, छोटे-से उकसाव पर भड़क उठनेवाले, धर्म के नामपर खून करनेवाले, सभी व्यक्तिवादी होते हैं, और .... और सभी सफेद चमड़ीवाली औरतों को पसन्द करते हैं..।"[9]

रिचर्ड के इस कथन में हिन्दुस्थानियों के लिए व्यंग्यात्मकता होने के साथ-साथ सारगर्भितता भी है।

(3)नाटकीयता :-

एक सफल नाटककार और अभिनेता होने के कारण भीष्म साहनीजी ने अपने उपन्यासों के संवादों में नाटकीय तत्व अत्यंत खूबी के साथ निभाये हैं। इसीकारण उपन्यासों में संवाद अधिक रोचक और पात्रानुकूल बने हैं। संवादों की यह नाटकीयता और स्वाभाविकता पात्रों के चरित्रचित्रण और रसनिष्पत्ति में अत्यंत सहायक सिध्द हुई है। पात्रोंद्वारा पुछे गए सहज, स्वाभाविक, सहज प्रश्न और पात्रों की जिज्ञासा पाठकों को प्रभावित करते है। "तमस" उपन्यास में नत्थु और उसकी पत्नी का संवाद देखिए। नत्थु की पत्नी नत्थु से पूछती है -

"कितनें पैसे मिले थे सुअर मारने के?"

"पाँच रूपये । वह मुझे पेशगी ही दे गया था।"

"पाँच रूपये ? इतने ज्यादा ? तूने क्या किया उन रूपयों का।"

"कुछ नहीं किया। चार रूपये बच रहे हैं, उधर ताकी पर रखे हैं।"

"मुझे बताया क्यों नाही?"

"मैंने सोचा तेरे लिए धोतियों का जोडा लाऊँगा ...।"

"मैं इन पैसों से धोतियाँ लूँगी ? मैं उन पैसों को आग नही लगाऊँगी ?"

नत्थु के पत्नी ने आवेश में कहा, "तुमसे ऐसा कुकर्म करवाया।" पर फिर वह संभल गयी। मुस्कराने की निष्फल चेष्टा करते हुए बोली, "यह तो तेरी कमाई के पैसे हैं, मैं क्यों नहीं लूँगी। इनसे जो कहेगा लूँगी।"[10]

(4) पात्रानुकूलता:-

भीष्म साहनी के उपन्यासों के पात्र किसी न किसी वर्गविशेष का प्रतिनिधित्व करते है। उसी वर्ग की भाषा का प्रयोग उन्होंने कथोपकथन में किया है। कथोपकथन में भीष्मजी ने पात्रानुकुलात का खयाल रखा है। ये पात्र कथोपकथन के साथ कथावस्तु को आगे ले जाते हैं और साथ ही चरित्र का उद्घाटन भी करते हैं। 'झरोखे' में भीष्मजी के पिताजी व्यापारी वर्ग का प्रतिनिधित्व करते है। पिताजी मुसलमान व्यापारी से बातचीत कर रहे है –

"सवा छः पिनी, खान जी, इससे कम वारा नहीं खाता। कितनी पेटियाँ लिखूँ?"

"दाम ज्यादा है।" मुशदी लुंगीवाला मुसलमान कहता है।

"आपके लिए क्या जादा है खान जी", और पिता जी हाथ बढाकर उसकी ठुड्डी को छू रहे हैं।"

"ऐसी डोरी तो अब बनती ही नहीं। एक फ्रांसवाला है जो बनाता है। बाकी बनानेवाले तो सब लाम में मर –खप गए।"

"दाम ज्यादा है।" मुशद्दी लुंगीवाला फिर कहता है।

"कितनी पेटियाँ लिखूँ? बहुत सोचा नहीं करो खान जी, सारे पेशावर में मैं सिर्फ आपको यह डोरी

देता हूँ। चलो, न तुम्हारी बात न मेरी, छः पिनी होगा। इससे कम नहीं हो सकता। वारा नहीं खाता, ईमान से खान जी, वारा नहीं खाता।"[11]

इसप्रकार भीष्मजी के पिताजी व्यापारी वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हुए व्यापारी मुसलमानों के साथ बातचीत करते हैं। 'तमस' उपन्यास में भी ऐसे अनेक प्रसंग आए हैं।

"अपने गाँव चलोगे, नत्थासिंह?"

"नी जाणा।" (नहीं जाऊँगा ।)

"क्यों नहीं जाणा?"

"नी जाणा।" उसने बच्चों की तरह सिर झटककर कहा।

"क्यों नहीं जाणा?"

"नी जाणा।" उसने कहा और अपनी जाँघे और ज्यादा सिकोड ली, और दाये–बायें बच्चों की तरह सिर हिलाने लगा।

"पर क्यों नहीं जाणा? कोई वजह?"

"उत्थे सुनती करने ने।" (वहाँ सुन्नत करते हैं।)

और वह खुद हँसने लगा और जाँघे और ज्यादा सिकोडकर करवट बदल ली।"[12]

इसप्रकार यहाँ पर पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग किया गया है।

(5) चरित्र–चित्रण और वस्तु की गति में सहायक कथोपकथन :–

भीष्म साहनी ने अपने उपन्यासों में चरित्र–चित्रण और कथावस्तु को आगे बढानेवाले कथोपकथनों का विस्तृत प्रयोग किया है। उदा. 'तमस' उपन्यास में नत्थु और उसकी पत्नी का निम्नलिखित कथोपकथन चरित्र के साथ-साथ कथावस्तु को भी आगे बढ़ाता हैं – पत्नी नत्थू के पास पास आ गयी, और उसके सिर पर हाथ फेरते हुए बोली –

"तू बोलता क्यों नही?"

"कुछ कहने को हो तो बोलूँ।" उसने धीरे से कहा।

"चाय बना दूँ? ठहर, मैं चाय बना देती हूँ।"

"मुझे चाय नहीं चाहिए।"

"अभी तो खुद बनाने को कह रहा था, अभी चाय नहीं चाहिए।"

"नहीं, मुझे नहीं चाहिए।"

"अच्छा फिर चल, खाट पर चल।" उसकी पत्नी ने हँसकर कहा।

"नहीं खाट पर भी नहीं चलूँगा।"

"नाराज हो गया ? तू मेरे साथ बात-बात पर नाराज होने लगा है।" पत्नी ने उलाहने के स्वर में कहा।

नत्थू चुप बना रहा। वह सचमुच बिसूरते बच्चे की तरह व्यवहार कर रहा था। "तू कल रात कहाँ गया था? तूने मुझे कुछ भी नहीं बताया।" नत्थू की पत्नी ने कहा और उसके पास फर्श पर बैठ गयी।[13]

इसप्रकार उपर्युक्त कथन के बाद पाठक की उत्सुकता बनी रहती है कि आगे क्या होगा? अपने उपन्यासों में भीष्मजी ने ऐसे कथोपकथन का प्रयोग किया है, जिससे पात्र का चरित्र और गति में सहायता मिलती हैं।

इसके साथ साथ भीष्मजी के उपन्यासों के कथोपकथन अत्यंत सहज, स्वाभाविक और सजीव बने हैं, उनमें कृत्रिमता नहीं है। उनके उपन्यासों के कथोपकथन अत्यंत उच्च कोटि के हैं, वे पात्र तथा वर्ग के अनुकूल है, चरित्र पर प्रकाश डालनेवाले है, कथावस्तु को आगे बढ़ाने में सहायक हैं, उनमें नाटकीयता है और लेखक के उद्देश्य की पूर्ति करनेवाले है।

4) देश, काल, वातावरण :-

देश, काल, वातावरण का महत्व :-

"घटनाओं, पात्रों और उनके कार्यकलापों को विश्वसनीयता एवं स्वाभाविकता प्रदान करने का कार्य उपन्यासों में देशकाल और वातावरण के द्वारा ही सम्भव हो पाता हैं। किसी व्यक्ति अथवा समाज को ही उपन्यास अपने वर्णन का आधार बनाता है। वर्ण्य व्यक्ति अथवा समाज के आचार-विचार, रहन-सहन, रीति-नीति, भाषा और उसके आसपास घिरी परिस्थितियाँ

ही देश–काल और वातावरण की संज्ञा धारण करती है। इन समस्त उपकरणों के सूक्ष्मातिसूक्ष्म चित्रण से ही उपन्यास के कथानक पात्र और कथा में यथार्थता तथा विश्वसनीयता आती है।"[14] उपन्यास की कथा को सत्य रूप देने के लिए, सत्य का आभास निर्माण करने के लिए, उसे सजीव एवं स्वाभाविक बनाने के लिए वातावरण की सृष्टि उपन्यास में होना अत्यंत आवश्यक एवं अनिवार्य है।

किसी भी देश की सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक परिस्थितियाँ, आचार–विचार, रीति–रिवाज, रहन–सहन, समाज की विशेषताएँ, कुरीतियाँ आदि देशकाल के अन्तर्गत समझी जा सकती है। देशकाल का वर्णन कथानक को स्पष्टता देता है। हमें यह देखना चाहिए कि देश काल वातावरण का वर्णन उपन्यास की कथा में बाधक न हो, कथानक की गति में बाधा न करे। उपन्यास स्वाभाविक और सजीव लगने के लिए उसमें उचित स्थानोंपर प्रकृति का चित्रण होना भी आवश्यक है। उपन्यास में देशकाल वातावरण के महत्व पर प्रकाश डालते हुए बाबू गुलाबराय ने कहा है, "यदि वे (पात्र) भगवान की भाँति देश–काल के बन्धनों से परे हो तो वे भी हम लोगों के लिए अभेद्य रहस्य बन जायेंगे। इसलिए देश–काल का वर्णन भी आवश्यक हो जाता है। व्यक्ति के निर्माण में वातावरण का बहुत कुछ हाथ होता है। जिसप्रकार बिना अंगूठी के नगीना शोभा नहीं देता उसी प्रकार बिना देश–काल के पात्रों का व्यक्तित्व भी स्पष्ट नहीं होता है और घटनाक्रम को समझने के लिए भी उसकी आवश्यकता होती है।"[15]

अन्त में हम कह सकते है कि किसी भी देश की सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनीतिक आदि समस्त परिस्थितियों का एकत्रित नाम है वातावरण। इन परिस्थितियों से संघर्ष करते हुए पात्र और कथानक आगे बढ़ता है। उपन्यासों में यह वातावरण रोचक एवं सन्तुलित होना आवश्यक है।

'झरोखे' और 'तमस' में देश काल चित्रण :-.

'झरोखे' और 'तमस' में भीष्मजी ने देशकाल वातावरण का सजीव और रोचक चित्रण किया हैं। इन दोनों उपन्यासों में कहीं भी तिथिक्रम का उल्लेख नहीं आया है, परंतु उपन्यास पढ़ने के बाद समझ में आता है कि दोनों उपन्यासों में किस काल तथा परिवेश का चित्रण किया है। तत्कालिन भारतीय समाज का जीवन्त परिवेश आपने पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है।

झरोखे :-

एक मध्यमवर्गीय परिवार में घटनेवाली घटनाओं का एकत्रिकरण है, भीष्म साहनीजी का उपन्यास "झरोखे"। भीष्मजी ने इसे अपनी आत्मकथा कहा हैं। इसमें एक मध्यमवर्गीय आर्यसमाजी परिवार का चित्रण किया गया हैं। इस परिवार के सदस्योंपर आर्यसमाज का गहरा प्रभाव है। परिवार में बचपन से ही बच्चों को संत मोतीराम के बारहमासे के गीत सुनाये जाते है। पिताजी मंत्र, संध्या, हवन, पूजा आदि अनेक धार्मिक कार्य करते है और बच्चों को भी करने के लिए कहते है। बच्चों को पढ़ाने के लिए जो पंडितजी घर आते है वे बच्चों को जीवन की क्षणभंगुरता तथा सेक्स और औरतों के प्रति पापबोधा की भावना को जगाते है। पंडितजी के यह विचार, संस्कार बच्चों के स्वाभाविक विकास में बाधक हैं। यह आर्यसमाजी हिन्दू परिवार ऐसे मुहल्ले में रहता है जहाँ हिन्दू मुस्लिम लोग एक साथ रहते है, परंतु इस मुहल्ले में हिन्दु-मुसलमानों के बीच वैमनस्य, विद्वेष की भावना है। मुहल्ले के मुसलमानों के घर जब बकरे की सिरी भुनी जाती है तो शुध्दि के लिए हिन्दूओं के घरों में हवन किया जाता हैं।

उपन्यास में भीष्मजीने अपने ही घर का तथा बचपन का चित्रण किया है। परिवार के बच्चों को मुहल्ले में दूसरे मुसलमान बच्चों के साथ खेलने नहीं दिया जाता। पिताजी आसपास के मुसलमानों को पापी, म्लेच्छ समझते है। मुसलमान बकरे की सिरी भुनते हैं, इसलिए वे गन्दे हैं। हिन्दुओं के खोमचे लूटते हैं, उनके बच्चे इश्कियाँ गीत गाते हैं और गंदी-गालियाँ देते है। मुसलमानों का द्वेष करनेवाले पिताजी मुसलमान व्यापारियों के साथ हँस-हँसकर बातें करते हैं, उन्हें चाय पिलाते है, खाना खिलाते है। उनकी ठुड्डी को हाथ लगाते है।

परिवार में लडकियों को घर से बाहर नहीं निकलने दिया जाता। घर में जोर से हँसने नहीं दिया जाता। भीष्मजी की दोनों बहने जब घर की छत पर जाती है तो एक आदमी उन्हें देखकर जान बुझकर नंगा हो जाता है। इसीकारण लडकियों को छत पर भी जाने नहीं दिया जाता। सारा मुहल्ला ताँगा चलानेवालों का और खोमचेवालों का है, जो सारा दिन काम करते हैं और रात को शराब पिते हैं। मुहल्ले के अनेक घरों में पति–पत्नी के बीच झगडे होते हैं, इसीकारण उनके बेटे आतंकित हैं।

भीष्मजी के परिवार में स्वंय भीष्मजी और उनके बड़े भाई को बचपन से ब्रह्मचर्य की शिक्षा दी जाती है। किशोर बच्चों में सामान्य होनेवाले हस्तमैथुन के बारे में और औरतों के बारे में गलत, अवैज्ञानिक दृष्टि को बढ़ावा दिया जाता हैं। भीष्मजी का बडा भाई बलदेव परिवार के खिलाफ विद्रोह करता हैं। घर में एक नौकर है तुलसी जो अनपढ है, परंतु परिवार में होनेवाले आर्यसमाजी परिवेश के कारण पढना, लिखना सिखता है, मंत्र, श्लोक, हवन भी सिखता है, अनेक जगहोंपर नौकरियाँ भी करता है, परंतु उसकी आर्थिक और सामाजिक स्थिति में कोई बदलाव नहीं आता। वह अन्त तक नौकर ही बना रहता है और अपने बच्चे को भी अपने साथ नौकर बनाता हैं।

बच्चों के पिताजी कट्टर आर्यसमाजी है, परंतु आर्यसमाजी संस्कारों के बावजूद भी माँ बच्चों की सेहत के लिए दूवाँ माँगने पिताजी से छुपकर मंदिर में और गुरूद्वारे में जाती है। बच्चों पर मुंडन और यज्ञोपवित के संस्कार किए जाते है। घर में जब बच्चे का जन्म होता है तो उसके जीभ पर शहद से "ओम" लिखा जाता है। माँ की चाभियाँ नहीं मिलती तो "प्रिशन" लगाया जाता है। नौकर तुलसी जब पासवाले मैदान में पाखाना करने चला जाता है तो मुहल्ले के लोग उसे पत्थर मारकर उठाते हैं। घर में आनेवाले मुसलमान व्यापारियों के लिए एक कोने में अलग बर्तन रखे जाते हैं। व्यापारी चले जाने के बाद उन बर्तनों को राख से माँजा जाता है।

इसप्रकार 'झरोखे' उपन्यास में भीष्मजी ने इ.स.1920 से 1940 तक के अपने परिवार के सामाजिक परिवेश को अभिव्यक्त किया है। देश, काल और वातावरण की दृष्टि से

'झरोखे' में किया गया चित्रण सफल बन गया है। इससे पात्रों के व्यवहार और घटनाओं में विश्वसनीयता आयी है।

तमस :-

1947 के साम्प्रदायिक दंगों के समय की परिस्थिति का चित्रण भीष्म साहनीजी ने "तमस" उपन्यास में किया है। देशविभाजन के समय अविभाजित पंजाब के राजनीतिक, सामाजिक, साम्प्रदायिक परिस्थिति का यथार्थ चित्रण "तमस" में हुआ है।

"तमस" के प्रारम्भ में ही इंग्रज अपनी कुटिल राजनीति का प्रयोग कर एक मरा हुआ सुअर मस्जिद में फेंकते हैं। मुसलमान मस्जिद में सुअर की लाश देखकर भडक उठते हैं। मुसलमान समझते हैं कि यह हिन्दूओं का काम है, इसलिए वे एक गाय की हत्या करते है। हिन्दू और मुसलमान दोनों भडक उठते हैं। इन्ही दो घटनाओं के कारण शहर में आग, लूटपाट, हत्याएँ, भय, आगजनी, बलात्कार का दौर शुरू होता है। शहर में कांग्रेस पार्टी के लोग प्रभातफेरियाँ निकालते है। शहर स्वच्छ करने का काम करते है। इसका मकसद इतना ही था कि सामान्य लोगों का ध्यान भी देश की आजादी की ओर आकृष्ट हो। कांग्रेस कार्यकर्ताओं में मेहताजी जैसे कार्यकर्ता भी है जो कांग्रेस के सेक्रेटरी है। कंाग्रेस के काम के साथ-साथ वे बीमा एंजट का काम भी करते हैं और उन्हें सेठी से दो लाख का बीमा मिलनेवाला है। कंाग्रेसद्वारा जब प्रभातफेरी निकाली जाती है उस समय मुस्लिम लीग के कार्यकर्ता "पाकिस्तान जिन्दाबाद, कायदे आजम जिन्दाबाद" के नारे लगाते हैं और स्वतंत्र पाकिस्तान बनाने की माँग करते हैं। मुस्लिम लीग के कार्यकर्ता कांग्रेस को हिन्दुओं की जमात समझते हैं और कंाग्रेसी मुसलमानों को हिन्दुओं के कुत्ते कहते है। इधर आर्यसमाज भी हिन्दुओं को मुसलमानों के खिलाफ भडकाने का काम करता है। आर्यसमाज के कुछ लोग युवकों को लाठी चलाने या छुरा चलाने का प्रशिक्षण देते है। आर्यसमाजी मुसलमानों को म्लेच्छ समझते हैं और मुसलमान हिन्दुओं को काफिर समझते हैं।

शहर में हो रहे दंगों को रोकने के लिए कुछ लोगों का एक शिष्टमंडल अंग्रेज कमिश्नर रिचर्ड से मिलने जाता है। रिचर्ड चाहे तो दंगे रोक सकता था, परंतु वह दंगे रोकने में अपनी असमर्थता व्यक्त करता है। रिचर्ड की इसी कुटिल राजनीति के कारण शहर में साम्प्रदायिक दंगे बढ़ते हैं। अंग्रेजोकी राजनीति के कारण हिन्दू-मुसलमान आपस में लडते रहते हैं। शहर में लूट, हत्याएँ और आगजनी का ताण्डव पाँच दिनों तक चलता हैं। हिन्दू और मुसलमानों के बीच धर्म के नामपर विद्वेष और घृणा निर्माण होती है। कुछ धर्मान्ध लोग जबरदस्ती से दूसरों का धर्मपरिवर्तन करते है।

एक ओर अंग्रेजों से आजादी पाने के लिए प्रयत्न चल रहे थे, तो दुसरी ओर सिक्ख समाज है, जिसके पाँव बीसवी सदी में हैं लेकिन सर मध्ययुग में है। मुसलमानो का सामना करने के लिए सिक्ख गुरूद्वारे में हथियार इकठ्ठा करते हैं। मुसलमानों के खिलाफ लड़ना सिक्ख अपना कर्तव्य समझते हैं। साम्प्रदायिकता के कारण सिक्ख और मुसलमानों के बीच घमासान युध्द होता हैं। अनेक सिक्ख औंरते अपने बच्चों के साथ कुएँ में कूदकर आत्महत्या करती है। साम्प्रदायिकता की यह आग शहर से गाँवों तक फैलती है। सभी ओर साम्प्रदायिक दंगे हो रहे थे, अनेक लोग मर रहे थे लेकिन रिचर्ड इन दंगों को रोकने का कोई प्रयास नहीं करता, परन्तु जब दंगों का अंतिम चरण चल रहा था, सब कुछ खत्म हो गया था उस वक्त रिचर्ड शहर पर हवाई जहाज उड़ाता है। अनेक पुलिस चौकियाँ स्थापन की जाती है, परंतु यह सब अगर पहले ही किया जाता तो शायद इतने लोग नहीं मरते। शहर में शांति स्थापन करने के लिए एक अमन कमेटी की स्थापना की जाती है। अमन कमेटी की बैठक जब होती है उस वक्त मुस्लिम लीग के कार्यकर्ता पाकिस्तान जिन्दाबाद के नारे लगाते हैं। शहर में "अल्ला-हो-अकबर", "हर हर महादेव" के नारे सुनने को मिलते हैं। लोग गुरूद्वारा प्रबन्धक कमेटी को सियासी पार्टी नहीं मानते।

दंगे खत्म होने पर अनेक हिन्दू-मुसलमान लोग अपने घर कौडियों के दाम बेचकर अपने इलाके में जाते हैं। हिन्दू-मुसलमान व्यापारी भी ऐसे घर कम दामों मे खरीदते हैं। यह वह कालखण्ड है जब स्वतंत्र पाकिस्तान का एलान किया गया था। देशविभाजन की पृष्ठभूमि को आधार बनाकर भीष्मजी ने "तमस" का निर्माण किया हैं। इसमें अपने उद्देश्य तक पहुँचने के लिए भीष्मजी ने वातावरण का सुंदर उपयोग किया है।

अंत में यह कहा जा सकता है कि जिस सामाजिक, राजनीतिक, साम्प्रदायिक परिवेश को भीष्मजी ने देखा, भोगा, जिस समाज में रहे, उसका चित्रण उन्होंने अपने उपन्यासों में किया है। रावलपिण्डी और दिल्ली के परिवेश को आपने चित्रित किया है। वातावरण को साधन मानकर ही आपने उपन्यासों में वातावरण को प्रायोजित किया है। आपके उपन्यासों में परिवेश का चित्रण अत्यंत रोचक, सजीव, चरित्र पर प्रकाश डालनेवाला और कथावस्तु को सफलता से आगे बढ़ानेवाला है।

(5) भाषाशैली :-

उपन्यास के भाषा की शैली में बाबू गुलाबराय ने दो शैलियाँ प्रमुख मानी है - "एक प्रेमचंद जैसी चलती शैली और दूसरी प्रसाद और ऋद्येशजी जैसी संस्कृतगर्भित शैली। उपन्यास में व्यास शैली के लिए बहुत गुंजाईशहै।"[16] सामान्यतः उपन्यासों में आत्मकथनात्मक, वर्णनात्मक, और डायरी शैली का प्रयोग किया जाता है। भाषा को सुबोध, प्रसादमय बनाने के लिए मुँहावरों का प्रयोग भी होता है। उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा आदि अलंकारों का प्रयोग भी शैली को आकर्षक बनाने में सहायक होता हैं। उपन्यासों को प्रभावपूर्ण और आकर्षक बनाने में शैली अत्यंत महत्वपूर्ण और मौल्यवान है।

(अ) भीष्म साहनी के उपन्यासों की भाषा :-

भीष्म साहनीजी ने अपने 'झरोखे' और 'तमस' में जनसामान्य की भाषाशैली का अधिक उपयोग किया है। भीष्मजी के सरल व्यक्तित्व का भी उनकी भाषाशैली पर प्रभाव

पड़ा हैं। उपर्युक्त उपन्यासों में अंग्रेजी, पंजाबी, उर्दू, हिन्दी भाषा का ठेठ प्रयोग किया है। अतः भीष्मजी के भाषाशैली की निम्नलिखित विशेषताएँ हमारे सामने आती है –

(1) पात्रानुकूलता :–

'झरोखे' और 'तमस' में भीष्मजीने जो पात्र चित्रित किए हैं वे समाज के किसी ना किसी वर्ग का प्रतिनिधित्व करनेवाले है। परिस्थिति और वातावरण के अनुसार पात्रों की भाषा है। भीष्मजी के उपन्यासों में ऐसे अनेक पात्र है जो अंग्रेजी, उर्दू, पंजाबी, ठेढ हिंदी बोलते हैं। इसीकारण आपके उपन्यासों की भाषा में अधिक विविधता पायी जाती हैं। 'तमस' उपन्यास में लीजा अंग्रेजी बोलती है परंतु प्रसंगानुरूप बाबू भी अंग्रेजी बोलता हैं ।

"यू हिण्डू, बाबू?"

"यस, मैडम", बाबू ने तनिक झेंपकर कहा।

लीजा अपनी सूझ पर खिल उठी।

"आई गेस्ड राइट ।"

"यस मैडम।"[17]

बरामदे में लीजा बाबू के साथ बोल रही थी –

"यू आर नो हिण्डु, यु टोल्ड ए लाई ।"

"नो मैडम, आई एम ए हिन्दू, ए ब्राह्मण हिन्दू ।"

"ओ नौ, दैन वेयर इज युअर टफ्ट ?"

बाबू डर रहा था। .... काले चेहरे में उसके सफेद दातों की लड़ी चमक उठी।

"आई हैव नो टफ्ट मैडम।"

"दैन यू आर नो हिण्डू।"

लीजा ने अपनी तर्जनी उसकी ओर हिलाते हुए हँसकर कहा,

"यू टोल्ड ए लाई।"

"नो मैडम, आई एम ए हिन्दू।"

"टेक आफ युअर कोट, बाबू।" लीजा ने कहा।

"ओह, मैडम !" बाबू फिर झेंप गया।

"टेक ऑफ, टेक ऑफ हर्री।"

बाबू ने मुसकराते हुए कोट उतार दिया।

"वैरी गुड, नाउ अन्बटन युअर शर्ट।"

"वॅाट मैडम ?"

"डोन्ट से वॅाट मैडम, से आई बेग युअर पार्डन मेडेम ऑल राइट,

अन्बटन युअर शर्ट।"[18]

इसीप्रकार ग्रामीण परिवेश का हरनामसिंह पंजाबी बोलता है – "सुण भागे भादिये, असाँ करे किसे दा बुरा नहीं चेतिया, बुरा नहीं कीता। इत्थो दे लोकी बी साडे नाल भरावाँ वाँग रहे हन। तेरिय़ाँ अखाँ साहमणे करीम खान दस वारा कह गिया है : चुपचाच बैठे रहवो, तुहाडे वल कोई अँख चुक के वी नहीं वेखणगा। करीमखान तो वडा मोतबर इत्थे कौण है? इक्को इक इत्थे सिख घर है? के गिरावालिय़ाँ नूँ सौडे ते हत्थ चुकदियाँ गैरत नहीं आयेगी?"[19]

मुस्लिम पात्र रमजान उर्दूमिश्रित हिन्दी बोलता है –

"बहुत बक–बक नहीं कर माँ, शहर में इन काफिरों ने दो सौ मुसलमान हलाक कर डाले है।"[20]

'झरोखे' में मध्यवर्ग के पात्र साधारण हिन्दी का प्रयोग करते हैं, जिसमें उनकी मानसिकता झलकती हैं –

माँ पिताजी से कहती है –

"मेरा मुर्दा देखोगे अगर बाहर हो गए तो। मुहल्ले में हर किसी से दुश्मनी लेते फिरते हो, यह बात अच्छी नहीं।"

"मुहल्ले में रहना है तो चूहों की तरह डरकर रहूँ।"

"मेरा मुर्दा देखो जो घर के बाहर जाओ। छोटे–छोटे मेरे बच्चों की कसम जो घर के बाहर पैर रखो। मैं तुम्हारे पाँव पड़ती हूँ।"[21]

निम्नवर्ग का तुलसी भी बोलचाल की साधारण हिन्दी का प्रयोग करता है –

"माताजी", तुलसी धीरे से कहता है, "क्या सारी उम्र मो बरतन ही माँजता रहूँगा?"[22]

तुलसी आगे बढकर माँ के पैर पकड लेता है, "मुझसे खता हो गई माताजी, मेरे मुँह से निकल गया। मेरा कोई मतलब नहीं था। मुझे माफ कर दो...।"[23]

इसप्रकार भीष्मजी के उपन्यासों का प्रत्येक पात्र अपने वर्ग की भाषा का प्रयोग करता है। भाषा में पात्रानुकुलता है, भाषा चरित्र पर प्रकाश डालती है। प्रत्येक वर्ग के अनुसार भीष्मजी ने भाषा का उचित प्रयोग किया है।

(2) सजीवता :–

भीष्मजी ने 'झरोखे' और 'तमस' में घटनाओं का ऐसा सजीव वर्णन किया है कि वातावरण पाठकों के सामने दृश्यरूप में आता है – "दो–तीन बार रमजान ने कुल्हाडी उठाने की कोशिश की, पर कुल्हाडी हाथ में रहते भी उसे उठा नहीं पाया। काफिर को मारना और बात है, अपने घर के अन्दर जान–पहचान के पनाहगजीन को मारना दूसरी बात। उसका ख़ून करना पहाड की चोटी पार करने से भी ज्यादा कठिन हो रहा था। मजहबी जनून और नफरत के इस माहौल में एक पतली सी लकीर कहीं पर अभी भी खिंची थी जिसे पार करना बहुत ही मुश्किल था। उसे रमजान भी पार नहीं कर पा रहा था।"[24]

"आँगन में खाटे बिछी है और परिवार के सभी लोग मजे में सो रहे हैं। हल्की–हल्की हवा चल रही है और आकाश में असंख्य तारे झिलमिल–झिलमिल कर रहे हैं, उजले–उजले, लगता है नहाकर आये हैं। मैं बिस्तर पर हम साधे लेटा हूँ, इस इंतजार में कि कब पिताजी की आँख लग जाए और मैं चुपके से नीचे जा पहुँचू। पडोस में चूडियाँ खनकने की आवाज आई है। थोडी देर बाद कोई आदमी पानीपीने के लिए उठा है। अच्छा हुआ जो खटका हुआ, वरना मैं ऊँघने लग जाता। मैं कोहनियों के बल थोडा–सा उठता हूँ। बिस्तरपर पीठ के बल लेटे रहो तो पता भी नहीं चलता और नींद अपने चंगुल में दबोच लेती है। पलभर हिलते रहो, करवट बदलते रहो, सिर उठा लो या मिनट–भर के लिए बैठ जाओ तो नींद दूर रहती है। कहीं

खटका हो जाए तो यह डूबते को तिनके का सहारा है।"[25]

इसप्रकार भीष्मजी के उपन्यासों की भाषा में स्वाभाविकता हैं। उनकी भाषा पात्रों की स्थिति और वातावरण का चित्र उपस्थित करने की क्षमता उनकी भाषा में है।

(3) स्वाभाविकता :-

भीष्मजी के उपन्यास 'झरोखे' और 'तमस' में सभी वर्गो के पात्रों का चित्रण किया गया है, साथ ही उनमें हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, अंग्रेज आदि पात्र भी आये है। ये सभी पात्र अपने वर्ग के अनुसार स्वाभाविक भाषा का प्रयोग करते हैं। उपन्यासों में मुस्लिम पात्र उर्दू मिश्रित हिन्दी का प्रयोग करते हैं, तो हिन्दू पात्र संस्कृत की शब्दावली का प्रयोग करते हैं। 'झरोखे' उपन्यास में अनेक जगहों पर संस्कृत श्लोकों का प्रयोग किया गया है –

"तमीश्वराणां परमं महेश्वरं
तम् देवतानां ...."
"परमं च दैवतम् ....
पतिं पतीनाम् परमें परस्तात्
हे देवं भुवनेषु मीडयम।"[26]

इसीप्रकार 'तमस' में अकराँ और उसकी साँस पंजाबी भाषा का प्रयोग करती हैं –

"काफरा की पनाह देने ओ। बहू माडा करने ओ। मडद तुहाँ पुछसन।"
(काफरों को पनाह दी है, बहुत बुरा किया है। मर्द आकर तुमसे पूछेंगे।)

पर उसकी सास विचलित नहीं हुई।

"तूँ चुप कर। बदनसीब कोई आये ते मा धक्का दे के बार कड्ढ देवाँ?" (तू चुप रह। कोई बदनसीब आये, मा उसे धक्का देकर बाहर निकल दूँ।)[27]

(4) भावुकता एवं मार्मिकता :-

'झरोखे' और 'तमस' में अनेक प्रसंगों में भावुकता एवं मार्मिकता का उपयोग भीष्मजी ने किया है। जहाँ कोमल और मधुर भावों की व्यंजना हुयी हैं वहाँ शैली भी कोमल ओर मधुर बन गयी है। 'तमस' में नत्थू और उसकी पत्नी के बीच का संवाद इस दृष्टि से दृष्टव्य है -

नत्थू बैचेन-सा खडा गया और देर तक ठिठका खडा रहा।

"क्या है।" उसकी पत्नी घबराकर बोली, "तुम इतने गुमसुम क्यों हो गये हो। सच-सच बताओ, तुम्हें मेरे सर की कसम।"

पर नत्थू चुपचाप हटकर खाट पर जा बैठा।

"क्या हुआ है?"

"कुछ नहीं।"

"कुछ तो हुआ है। तू मुझसे छिपा रहा है।"

"कुछ नहीं।" उसने फिर से कहा।

पत्नी नत्थू के पास आ गयी, और उसके सिर पर हाथ फेरते हुए बोली -

"तू बोलता क्यों नहीं?"[28]

इसप्रकार स्निग्धता, भावप्रवणता और कोमलता का उपयोग उपन्यासों में अनेक जगहों पर किया है।

(5) व्यंग्यात्मकता :-

भीष्म साहनी की भाषा शैली में व्यंग्य का प्रयोग तो हुआ है, लेकिन 'झरोखे' और 'तमस' में अत्यंत कम मात्रा में व्यंग्य का प्रयोग किया है।

"सुनो ! सभी हिन्दुस्तानी चिडचिड मिजाज के होते हैं, छोटे-से उकसाव पर भडक उठनेवाले धर्म के नामपर खून करनेवाले, सभी व्यक्तिवादी होते हैं, और .... और सभी सफेद चमडीवाली औरतों को पसन्द करते हैं....।"[29]

"अब पहले वाली बात तो नहीं है कम–से–कम। पहले तो दूसरों को काट खाता था, हर राह–जाते से लडाई मोल लेता फिरता था। अब तो अपने को ही काटता है।"[30]

इसप्रकार अनेक प्रसंगों में भीष्मजी ने व्यंग्य का निर्माण किया हैं। छोटे छोटे प्रसंगों में भी व्यंग्य निर्मिति की हैं।

(6) ओज और प्रभावात्मकता :–

'झरोखे' और 'तमस' में जहाँ पर उग्र भावों की व्यंजना हुई है वहाँ पर ओज देखते ही बनता है। 'तमस' में निम्नांकित प्रसंग में ओज दृष्टिगत होता है। राजो की आवाज में क्रोध के कारण ओज और उग्रता आयी है –

"क्यो भौक रहा है तू।" राजो की आवाज थी, "किधर है यह चुडैल? तेरी मैंने जीभ न खींच ली तो कहना, हरामजादी, तुझे मना किया था इसे नहीं बताना, क्यों बताया है? तेरे पेट में बात नहीं पचती?... तू क्या चाहता है, रमजाना? घर में खून करेगा?घर में पनाह लेने वाले को मारेगा? यह आदमी हमारी जान–पहचान का है, हम इसके देनदार रहे हैं।"[31]

इसप्रकार आवेश के प्रसंगों में भाषा में क्षिप्तता और उग्रता आई है। पात्रों के मनोभावों के अनुकूल भाषा का प्रयोग भीष्म साहनीजी ने किया है।

(7) शब्दचयन :–

भीष्मजी ने अपने उपन्यासों में पात्रों की भाषा के अनुसार शब्दों का चयन किया है। उचित स्थानों पर संस्कृत, अंग्रेजी, पंजाबी, हिन्दी के ठेढ शब्दों का प्रयोग दोनों उपन्यासों में किया हैं। भाषा की स्वाभाविकता बढाने के लिए अनेक लोकप्रचलित शब्दों का प्रयोग भी किया हैं। उदाहरण के लिए – प्रिशन, सुफा, रंगसाज, चुन्नी, भाया, तंदूर, काफरॉं, कड्ढ देवाँ, नेकबख्त आदि। अनेक जगहोंपर शब्दों में क्लिष्टता भी आयी हैं। उर्दू, फारसी के शब्दों का प्रयोग अनेक जगहों पर किया गया है। अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग भी अनेक जगहों पर किया है। जैसे – डिप्टी कमिश्नर, प्रिंसिपल, कालिज, लाई, टफ्ट, ड्रेसिंग टेबुल आदि।

उसीप्रकार अनेक पंजाबी शब्दों का भी प्रयोग किया है – जैसे – सातनाम, ग्रंथी, निहाल, वाहगुरू, तुसाँडे, अकाल, निहंग आदि।

इसप्रकार भीष्मजी का शब्दभांडार अधिक व्यापक हैं। उन्होंने कृत्रिमता के अलावा स्वाभाविक शब्दों का प्रयोग किया है। पंजाबी, उर्दू, अंग्रजी शब्दों को लेकर भी हिन्दी की रक्षा करने का भीष्मजी का प्रयत्न अत्यंत सराहनीय हैं।

(8) प्राकृतिक उपादानों का प्रयोग :–

प्रकृति मानवीय भावनाओं की उत्प्रेरक हैं। भीष्म साहनी ने अपनी भाषा में प्राकृतिक उपादानों का अत्यंत सफल प्रयोग किया हैं। भाषा की सक्षमता को प्रकट करने के लिए भीष्म साहनी प्राकृतिक उपादानों तथा बिम्ब प्रतिकों का प्रयोग एक सिध्दहस्त शैलीकार के रूप में किया हें। जैसे –

"आले में रखे दीये ने फिर से झपकी ली।"[32] तमस उपन्यास के प्रारम्भ में आया यह वाक्य समूचे साम्प्रदायिक अंधःकार का प्रतीक है जो पूरे उपन्यास की समुचित स्थिति को हमारे सामने प्रस्तुत करता हैं।

"शाम के साये अभी पूरी तरह से उतर नहीं पाये थे और नदी का रंग डूबते हुए सूरज की लाली के कारण लाल होने लगा था।"[33]

'झरोखे' में भी बच्चे गीत गाते हैं –

"फूलों में हम आते हैं, आते हैं
ठंडी मौसम में, ठंडी मौसम में।
तुम किसको लेने आते हो, आते हो।
ठंडी मौसम में।"34

इसप्रकार प्राकृतिक उपादानों का प्रयोग भीष्मजी ने अत्यंत सफलता से किया हैं।

(9) <u>बोलचाल की भाषा</u> :-

भीष्मजी के उपन्यास 'झरोखे', 'तमस' में जहाँ कही जनसामन्य लोग आते हैं, वे बोलचाल की भाषा का प्रयोग करते हैं। 'झरोखे' में फकीर बालक भीष्मजी से कहता है – "डाल दो बेटा, झोले में डाल दो" , "अल्लाह सलामत रखे, घर भरा रहे।"[35] उसीप्रकार तुलसी माँ से कहता है, "माता जी", तुलसी धीरे से कहता है, "क्या सारी उम्र मैं बरतन ही माँजता रहूँगा ?"[36]

तुलसी की पत्नी भी सामान्य बोलचाल की भाषा का प्रयोग करती है – "वह तो सीढियाँ धोने गए हैं जी, अभी आ जाएँगे।"[37]

'तमस' में भी सामान्य लोग बालचाल की भाषा का प्रयोग करते हैं – जैसे

"खोल मुँह, तेरी माँ की..... खोलमुँह। ..... अब चूस जा इसे मादर..."[38] इत्रफरोश भी सामान्य भाषा का प्रयोग करता है, "मुझे भी आज फेरी पर नहीं निकलना चाहिए था", उसने इन्द्र से कहा, "आज भी कोई दिन है फेरी करने का? सारे शहर में सूखा पडा है। पर मैंने सोचा घर पर क्या करूँगा, दो–चार आने की जुगाड हो जाये तो क्या बुरा है, दूकानदार घर पर बैठा रहे तो खायेगा कहाँ से?"[39]

इसप्रकार अनेक प्रसंगों में भीष्मजी ने बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया हैं।

(10) <u>गीतों और संस्कृत श्लोकों का प्रयोग</u> :-

उपन्यासों में गीतों का और श्लोकों का प्रयोग अपनी खासियत हो सकती है। भीष्म साहनीजी ने अपने उपन्यासों की कथा आगे बढाने और पात्रों की मन:स्थिति का वर्णन करने के लिए और पात्रों के परिवेश को सजीव बनाने के लिए अनेक स्थानों पर लोकगीतों, भक्तिगीतों, संस्कृत श्लोकों का प्रयोग किया हैं।

"जरा वी लगन आजादी दी
लग गयी जिन्हाँ दे मन दे विच।"

चलते कदमों की टाप .... अगली दो पंक्तियाँ उठायी :

"ओह मजनूँ बण फिरदे ने

हर सेहरा हर बन दे विच।"[40]

"बलदेव को लेने आती हैं, आती है,

ठंडी मौसेम में।

ठंडी मौसम में।

बलदेव को लेने आती है, आती हैं,

ठंडी मौसम में।"[41]

"चेतर चित्त विच समझ पियारे

दुनिया झूठा भाणा ई

जिन्हां नाल तुध लाई दोस्ती

उन्हांवी चला जाणा ई।"

मैं इस बारहमासे से भलीभाँति परिचित हूँ। ..... माँ गा रही है :

"इस माया दा माण न करिए

माया काग बन्हेरे दा

पल विच आवे, छिन विच जावे

सैर करे चौफेरे दा ।"[42]

"परमं च दैवतम्...

पतिं पतीनाम् परमं परस्तात्

विधान देवं भुवनेषु मीड्यम्।"[43]

इसप्रकार 'झरोखे' और 'तमस' में भीष्म साहनी द्वारा प्रयुक्त भाषा में निम्नलिखित विशेषताएँ हमारे सामने आती है –

(1) भाषा में पात्रानुकूलता हैं।

(2) भावात्मक प्रसंगों की भाषा में प्रवाह की तरलता हैं।

(3) चिन्तन स्थलोंपर भाषा गम्भीर हैं।

(4) करूण प्रसंगों की भाषा में, कोमलता, भाव प्रवणता, स्निग्धता हैं।

(5) आवेशभरे प्रसंगों में भाषा में क्षिप्रता ओर उग्रता हैं।

(6) भाषा में सरसता और सरलता हैं।

(7) भाषा साहित्यिक होते हुए भी क्लिष्ट नहीं हैं।

(8) उर्दू, अंग्रेजी, पंजाबी के प्रचलित शब्दों का प्रयोग हुआ हैं।

(9) परिस्थितिवश श्लोकों, लोकगीतों का उपयोग किया गया हैं।

(10) सूत्र कथनों की भाषा तत्समता लिए हुए हैं।

(ब) <u>भीष्म साहनी के उपन्यासों में शैली</u> :-

सामान्यतः उपन्यासों में कथा शैली, आत्मकथन शैली, पत्र-शैली, और डायरी-शैली का प्रयोग किया जाता हैं। भीष्म साहनी के उपन्यास 'झरोखे' और 'तमस' में प्रथम दो शैलीयों का प्रयोग किया गया हैं। 'झरोखे' में आत्मकथन शैली को और 'तमस' में कथा शैली का प्रयोग कर लिखे गये हैं। इन दो शैलियों के विविध रूप भीष्मजी की शैली में हमें मिलते हैं -

(1) <u>वर्णनात्मक शैली</u> :-

भीष्म साहनीजी ने 'तमस' में वर्णनात्मक शैली का उपयोग अनेक जगहोंपर किया है। किसी परिस्थिति, वस्तु, घटना या पात्रों के बाह्य और आन्तरिक चरित्र का उद्घाटन इस शैलीद्वारा किया जाता हैं। 'तमस' में वर्णन अत्यंत चित्रात्मक और सजीव हुए हैं - "तुर्क आये थे पर वे अपने ही पडोसवाले गाँव से आये थे। तुर्को के जेहन में भी यही था कि वे अपने पुराने दुश्मन सिक्खोंपर हमला बोल रहे हैं और सिक्खों के जेहन में भी वे दो सौ साल पहले के तुर्क थे जिनके साथ खालसा लोहा लिया करता था। यह लडाई ऐतिहासिक लडाइयों की श्रृंखला में एक कडी ही थी। लडनेवालों के पाँव बीसवी सदी में थे, सिर मध्ययुग में।

घमासान युध्द हुआ। दो दिन और दो रात तक चलता रहा। फिर असला चुक गया और लडना नामुमकिन हो गया। अब गुरूग्रन्थ साहब की चौकी के पीछे, सफेद चादरों से ढकी सात लाशें पडी थी। पाँच लाशों के सिर अपनी-अपनी गोद में रखे पाँच औरते बैठी थी। बहुत आग्रह करने पर कुछ देर के लिए वे उठ जाती, पर तेजासिंह के पीठ मोडने की देर होती कि वे फिर आ बैठती थीं। दो लाशों का वाली वारिस कोई नहीं था। इनमें से एक लाश निहंगसिंह की थी जो उस समय भी, जब गोलियों की बौछार पडने लगी थी, मूँछों को ताव देता हुआ, छाती ताने छत पर खडा रहा था। दूसरी लाश सोहनसिंह की थी .... । यों भी सोहनसिंह के मरने के कुछ देर पहले सोहनसिंह और मीरदाद दोनों ही की स्थिति अमर करानेवालों की जगह मात्र हरकारों की स्थिति रह गयी थी।

इनके अलावा बहुत-सी लाशें कस्बे के अन्दर जगह-जगहर बिखरी पडी थीं। उन्हें ठिकाने लगाने का अभी सवाल ही नहीं उठता था। ....। दूसरी ओर कसाईयों की तीनों दूकानें, और तेली मुहल्ले के तीन-चार मुसलमानों के घर अभी भी जल रहे थे।"[44]

(2) भावात्मक शैली :-

भावात्मक शैली के अनेक प्रसंग 'तमस' में ही मिलते हैं। सिख औरतों का अपने बच्चों के साथ कुएँ में कूदने का प्रसंग अत्यंत कारूणिक हुआ है, जो भावात्मक शैली में प्रस्तुत किया गया हैं।

"मन्त्रमुग्ध-सी सभी उस ओर बढती चली जा रही थीं। किसी को उस समय ध्यान नहीं आया कि वे कहाँ जा रही हैं, क्यों जा रही हैं। छिटकी चाँदनी में कुएँ पर जैसे अप्सराएँ उतरती आ रही हों।

सबसे पहले जसबीर कौर कुएँ में कूद गयी। उसनें कोई नारा नहीं लगाया, किसी को पुकारा नहीं, केवल 'वाह गुरू' कहा और कूद गयी। उसके कूदते ही कुएँ की जगत पर कितनी ही स्त्रियाँ चढ गयीं। हरसिंह की पत्नी पहले जगत के ऊपर जाकर खडी हुई, फिर उसने अपने चार साल के बेटे को खींचकर ऊपर चढा लिया, फिर एक साथ ही, उसे हाथ से

खींचती हुई नीचे कूद गयी। देवासिंह की घरवाली अपने दूध पीते बच्चे को छाती से लगाये ही कूद गयी। प्रेमसिंह की पत्नी खुद तो कूद गयी, पर उसका बच्चा पीछे खडा रह गया। उसे ज्ञानसिंह की पत्नी ने माँ के पास धकेलकर पहुँचा दिया। देखते–ही–देखते गाँव की दसियों औरतें अपने बच्चो को लेकर कुएँ में कूद गयीं।"[45]

इसप्रकार भावात्मक शैली के प्रसंग अत्यंत कारूणिक बन पडे हैं।

(3) नाटकीय शैली :–

एक सफल नाटककार होने के नाते भीष्मजी ने अनेक नाट्यात्मक प्रसंगों का प्रयोग किया हैं। इस शैली में पात्रों के चरित्र भी प्रकाशित हुए हैं। अनेक जगहों पर कथोपकथनी के रूप में नाटकीय शैली का प्रयोग किया है। 'तमस' में लीजा और रिचर्ड के संवाद देखिए –

"क्या गडबड होगी ? फिर जंग होगी?"

"नहीं, मगर हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच तनातनी बढ रही है, शायद फसाद होंगे।"

"ये लोग आपस में लडेंगे? लन्दन में तो तुम कहते थेकि ये लोग तुम्हारे खिलाफ लड रहे हैं।"

"हमारे खिलाफ भी लड रहे हैं ओर आपस में भी लड रहे हैं।"

"कैसी बात कर रहे हो? क्या तुम फिर मजाक करने लगे?"

"धर्म के नाम पर आपस में लडते हैं, देश के नाम पर हमारे साथ लडते हैं।" रिचर्ड ने मुसकराकर कहा।

"बहुत चालाक नहीं बनो, रिचर्ड। मैं सब जानती हूँ। देश के नाम पर ये लोग तुम्हारे साथ लडते हैं ओर धर्म के नाम पर तुम इन्हें आपस में लडाते हो। क्यों ठीक है ना?"

"हम नहीं लडाते, लीजा, ये लोग खुद लडते हैं ।"

"तुम इन्हें लडने से रोक भी तो सकते हो। आखिर हैं तो ये एक ही जाति के लोग।"46

(4) व्यंग्यात्मक शैली :-

भीष्मजी ने 'तमस' और 'झरोखे' उपन्यास में अनेक प्रसंगों में व्यंग्यात्मक शैली को अपनाया है। 'तमस' उपन्यास में कमिश्नर रिचर्ड का कथन व्यंग्यात्मक है –

"सुनो। सभी हिन्दुस्तानी चिडचिडे मिजाज के होते हैं, छोटे–से उकसाव पर भडक उठनेवाले, धर्म के नाम पर खून करनेवाले, सभी व्यक्तिवादी होते हैं, ओर .... और सभी सफेद चमडीवाली औरतों को पसन्द करते हैं ...।"[47]

'झरोखे' में निम्नांकित प्रसंग भी व्यंग्यात्मक कथनवाला है –

"अब पहले वाली बात तो नहीं है कम–से–कम। पहले तो दूसरों को काट खाता था, हर राह–जाते से लडाई मोल लेता फिरता था। अब तो अपने को ही काटता है।" और माँ हँसने लगी हैं। मैं अँधेरे में माँ के हिलते पैर को देख रहा हूँ।

"आर्यसमाजियों का रंग चढ रहा है उस पर, क्यों भाया जी?"

बुआ कहती हैं और वह भी हँसने लगती है।[48]

(5) आत्मकथनात्मक शैली :-

भीष्म साहनीजी का 'झरोखे' उपन्यास आत्मकथनात्मक शैली में लिखा गया हैं। इसमें भीष्मजी ने अपने बचपन की यादों का इसप्रकार चित्रण किया है कि पूरा उपन्यास आत्मकथनात्मक हो गया हैं। अपने बचपन से लेकर जवानी के दिनों तक का वर्णन भीष्मजी ने 'झरोखे' उपन्यास में किया है। उपन्यास के प्रारम्भ में वे लिखते है कि – "जिंदगी पर के कुछेक झरोखे, लगता है, अपने हाथों से खोल रहा हूँ।"[49] इसप्रकार भीष्मजी ने इस उपन्यास को अपने बचपन की आत्मकथा ही माना है। आत्मकथनात्मक शैली की दृष्टि से भीष्मजी का 'झरोखे' उपन्यास महत्वपूर्ण हैं।

उपर्युक्त शैली के विवेचन से स्पष्ट होता है कि भीष्म साहनी द्वारा लिखे उपन्यास 'झरोखे' और 'तमस' भाषा शैली की दृष्टि से अत्यंत सफल हैं। भाषा सरल और प्रवाहमयी है।

शैली में दृष्टिचित्र उपस्थित करने की क्षमता हैं। भाषा के विविध स्तरों का इतना सधा हुआ प्रयोग भीष्मजी के उपन्यासों में देखने को मिलता है कि उनकी अद्‌भूत कलात्मक सिध्दता हमारे सामने प्रस्तुत होती है। उन्होंने कही भी अनावश्यक विस्तार और कृत्रिम फैलाव नहीं किया। उनकी भाषाशैलीद्वारा वास्तविकता के सभी पहलू, सारे अन्तराल पाठकों के सामने स्पष्ट होते हैं।

(6) <u>उद्‌देश्य</u> :-

उपन्यासकार अपने उपन्यासों में किसी विशिष्ठ दृष्टिकोण का सहारा लेकर मानव-जीवन का चित्रण करता हैं। अपने विचारों को पाठकों के सामने प्रस्तुत करने के लिए वह कुछ पात्रों का निर्माण करता हैं। ये पात्र लेखक के विचारों की प्रतिध्वनि होती हैं। उपन्यासकार किसी भी पध्दति को अपनाए उसका उद्‌देश्य एवं जीवन-दर्शन उसकी रचना में निहित रहता हैं।

<u>भीष्म साहनी के उपन्यास 'झरोखे' और 'तमस' के उद्‌देश्य</u> :-

एक सफल नाटककार होने के साथ भीष्मजी एक सफल यथार्थवादी उपन्यासकार भी हैं। आलोचनात्मक यथार्थवादी दृष्टि से आपने समाज का चित्रण अपने उपन्यास 'झरोखे' और 'तमस' में किया हैं। मार्क्सवाद का गहरा प्रभाव होने के कारण आप मार्क्सवादी दृष्टि से जीवन को देखकर उपन्यास में चित्रित करते हैं। आपके उपन्यास 'झरोखे' और 'तमस' का अध्ययन करने के पश्चात जो उद्‌देश्य नजर आते हैं वे निम्न प्रकार से हैं।

(1) हिन्दू-मुसलमान समाज के लोगों में होनेवाली विविध कुण्ठाओं की अभिव्यक्ति करना।

(2) साम्राज्यवादी अंग्रेजों की शोषक नीति का पर्दाफाश करना।

(3) निम्नवर्ग की विविध समस्याओं का उद्‌घाटन करना। साथ ही मध्यमवर्गीय लोगों की विडम्बनाएँ, अन्तर्विरोध और पाखण्ड की गुँथियाँ खोलना भी आपका उद्‌देश्य रहा हैं। परिवार के बदलते रिश्तों का चित्रण आपने 'झरोखे' उपन्यास में किया हैं।

(4) साम्प्रदायिकता के परिणाम दर्शाना। 'तमस' में साम्प्रदायिकता के विविध ऐतिहासिक , सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक कारण बताकर, साम्प्रदायिकता के परिणाम

स्पष्ट किये हैं।

(5) परिवार में बच्चों के स्वाभाविक विकास का मार्ग प्रशस्त करना भी आपका का उद्‌देश्य रहा है जो 'झरोखे' उपन्यास में स्पष्ट है। झरोखे उपन्यास में भीष्म और बलदेव दिखाना चाहते है कि बच्चों पर साम्प्रदायिक संस्कार उन्हें हीन भावना का शिकार बनाते हैं। स्त्री और सेक्स के बारे में बच्चों को गैरमनोवैज्ञानिक दृष्टि देने के कारण बच्चों में हीनता और ग्लानि आती है। बच्चे आत्मनिर्वासित होते हैं।

(6) भीष्मजी ने अपने उपन्यासों के द्वारा धर्मातीत और शोषणमुक्त मानवीय आस्थावाले, समाजरचना को संभव बनाया है। यही आपका मुख्य उद्‌देश्य रहा है। जाति में, देश में विभक्त होनेवाला या किया जानेवाला विभाजन निरर्थक होता है। मनुष्य ही मनुष्य का भला कर सकता है, परन्तु मनुष्य में अगर स्वार्थ आ जाता है तो धर्म, जाति, राष्ट्र सभी विनाश की ओर बढते हैं। इन्हीं बातों को आपने अपने उपन्यासों में स्पष्ट किया हैं।

इसप्रकार हिन्दी उपन्यास के क्षेत्र में भीष्मजी का योगदान अमूल्य रहा है। उपन्यासों में कला की नवीनता, घटनाओं की नाटकीयता, वातावरण की सजीवता, भाषाशैली की विविधता, युगीन समस्याओं का चित्रण मिलता है। आपने स्वयं भोगे हुए यथार्थ का चित्रण उपन्यासों में किया हैं। मार्क्सवादी विचार तथा संस्कारों के प्रति आप ईमानदार हैं। भीष्मजी एक समाजोन्मुखी कलाकार रहे हैं। आपके द्वारा लिखित उपन्यास 'झरोखे' और 'तमस' कथा और शिल्प की दृष्टि से हिन्दी उपन्यास साहित्य में एक उपलब्धि हैं।

सन्दर्भ

1. हिन्दी उपन्यास – उत्तरशती उपलब्धियाँ – डॉ. विवेकी राय, पृष्ठ 172
2. भीष्म साहनी व्यक्तित्व और रचना – राजेश्वर सक्सेना, प्रताप ठाकुर, बातचित – एक – असगर वजाहत, पृष्ठ 20
3. शिवानी के उपन्यासों का रचनाविधान – शशिबाला पंजाबी – पृष्ठ 40

   प्रेमचन्द जीवन, कला और कृतित्व – हंसराज रहबर, पृष्ठ 219
4. 'तमस' – भीष्म साहनी – दसवीं आवृत्ति (पुनर्मुद्रित) 1999 – पृष्ठ 45
5. 'झरोखे' – भीष्म साहनी – तीसरी आवृत्ति 1999 – पृष्ठ 32
6. वही, पृष्ठ 8
7. तमस, पृष्ठ 45
8. झरोखे, पृष्ठ 99
9. तमस, पृष्ठ 44
10. वही, पृष्ठ 160–161
11. झरोखे, पृष्ठ 57–58
12. तमस, पृष्ठ 243
13. वही, पृष्ठ 159
14. हिन्दी उपन्यास – शिल्प और प्रयोग – डॉ. त्रिभुवनसिंह, पृष्ठ 287
15. शिवानी के उपन्यासों का रचनाविधान – शशिबाला पंजाबी, पृष्ठ 65

    काव्य के रूप – बाबू गुलाबराय, पृष्ठ 175
16. वही, पृष्ठ 78

    वही, पृष्ठ 184
17. तमस, पृष्ठ 89–90
18. वही, पृष्ठ 90
19. वही, पृष्ठ 164

20. वही, पृष्ठ 201
21. झरोखे, पृष्ठ 54
22. वही, पृष्ठ 79
23. वही, पृष्ठ 82
24. तमस, पृष्ठ 201–202
25. झरोखे, पृष्ठ 101
26. वही, पृष्ठ 42
27. तमस, पृष्ठ 195
28. वही, पृष्ठ 158–159
29. वही, पृष्ठ 44
30. झरोखे, पृष्ठ 71
31. तमस, पृष्ठ 201
32. वही, पृष्ठ 7
33. वही, पृष्ठ 189
34. झरोखे, पृष्ठ 132
35. वही, पृष्ठ 16
36. वही, पृष्ठ 79
37. वही, पृष्ठ 92
38. तमस, पृष्ठ 209
39. वही, पृष्ठ 153
40. वही, पृष्ठ 25–26
41. झरोखे, पृष्ठ 11
42. वही, पृष्ठ 9

43. वही, पृष्ठ 42

44. तमस, पृष्ठ 211–212

45. वही, पृष्ठ 218–219

46. वही, पृष्ठ 44–45

47. वही, पृष्ठ 44

48. झरोखे, पृष्ठ 71

49. वही, पृष्ठ 7